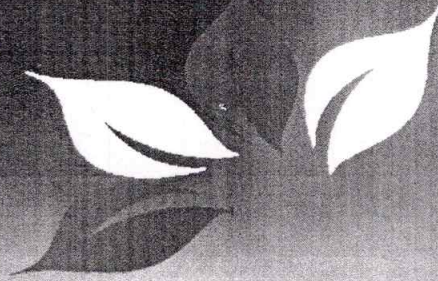


# AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2022 Special Issue 04, Vol. VI (C)



## CONTEMPORARY TRENDS IN HUMANITIES, COMMERCE AND LIBRARY SCIENCE (CTHCLS 2022)



Guest Editor

**Dr. Ganesh Anant Thakur**

Principal

Mahatma Phule Arts, Science and Commerce College, Panvel.

District: Raigad: Maharashtra. 410206

Executive Editor

**Mr. Sopan L. Gove**

IQAC Co-ordinator

M.P.A.S.C. College, Panvel

Associate Editor

**Mr. Sunil S. Avachite**

Librarian

M.P.A.S.C. College, Panvel





## Index

Sr.No.	Title of the paper	Author's Name	Pg.No
1	जागतिकीकरण आणि नवसंवेदन	डॉ. विद्या नावडकर	05
2	उत्तर आधुनिकतावादाच्या अनुषंगाने नव्वदोत्तर मराठी अनियतकालिकांमधील कविता या साहित्यप्रकाराची चिकित्सा	प्रा. प्रवीण गायकर	09
3	'ओरबिन' - औद्योगिकीकरणाचे भीषण वास्तव (गजानन देसाई)	डॉ. वर्षा फाटक	13
4	आधुनिक मराठी ग्रामीण कविता	डॉ. अतुल चौर	16
5	उत्तर आधुनिकता आणि आदिवासी साहित्य	प्रा. अनिल वळवी	20
6	आधुनिक मराठी साहित्य-नाटक साहित्यप्रकार	प्रा. दीपक गडकर	24
7	आदिवासी कवितेची वाटचाल	डॉ. सोनू लांडे	28
8	कोरोना महामारीचा नाशिक जिल्ह्यातील कृषी पर्यटनावर झालेला परिणाम	वाघ जीवनकुमार शामराव	31
9	कोविड काळात भारतातील स्थूल देशांतर्गत उत्पादनाचे विश्लेषण	प्रा. संतोष गोरवे	35
10	कृषी संशोधनाची कृषी विकासातील भूमिका संदर्भ: प्रादेशिक संशोधन केंद्र कर्जत, जिल्हा. रायगड, महाराष्ट्र	डॉ. रमेश पदु म्हात्रे	39
11	भारतातील कृषी संशोधनाची कृषी विकासातील भूमिका	श्री कांतिलाल शंकर पाटील डॉ. अनिल नारायण पाटील	44
12	आदिवासी महिलांच्या शाश्वत विकासासाठी शासनाच्या शैक्षणिक योजना: संदर्भ पनवेल तालुका	सौ. सुचिता रमेश म्हात्रे डॉ. डी. व्ही. पवार	48
13	भारताच्या आर्थिक विकासात सागरी मत्स्य व्यवसायाची भूमिका	सिताफुले एल .एस .	53
14	कृषी संशोधनाची कृषी विकासातील भूमिका संदर्भ : कृषी संशोधन केंद्र पालघर	डॉ. जयवंत काशिनाथ पाटील	58
15	महाराष्ट्रातील शैक्षणिक सुधारणा चळवळीचा इतिहास	डॉ. शिंदे भानुदास धोंडीबा	61
16	भारतीय लोकशाही समोरील आव्हाने	डॉ. सुनिल लक्ष्मण परदेशी	64
17	महात्मा गांधीजींच्या अहिंसेची वर्तमानकाळाच्या संदर्भात विज्ञाननिष्ठ प्रासंगिकता	डॉ. गणेश शंकर विधाटे	66
18	१९६२ चे चीनचे आक्रमण व यशवंतराव चव्हाणांची भूमिका	डॉ. राजश्री निकम	69
19	रायगड जिल्ह्यातील आदिवासी समाजाच्या आर्थिक समस्या	डॉ. पाथरकर एस. व्ही.	73
20	भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील विद्यार्थ्यांचे योगदान	प्रा. शिंदे नारायण अंबू	76
21	इंदिरा गांधी यांचे जीवन व कार्य एक चिकित्सक अभ्यास	डॉ. रविंद्र बाबुराव जाधव	78
22	जागतिक राजकारणातील समकालीन समस्या	प्रा. डॉ. पराग गोविंद पाटील	81



45



## साहित्य और सिनेमा का अंत-संबंध

प्रा. चव्हाण स्वाती विष्णू  
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय, औंध, पुणे  
मो. 9699301951 मेल-chavanswati9075@gmail.com



साहित्य की परंपरा सैकड़ों साल पुरानी है। सिनेमा की उम्र अभी बहुत कम मात्रा में है। साहित्य बहुत समृद्ध है और उससे सिनेमा गीत, चरित्र, माहौल, भाषा जैसी बहुत-सी जरूरतें पूरी हुई हैं। साहित्य और सिनेमा का संबंध एक अच्छे या बुरे पड़ोसी, मित्र या संबंधी की तरह एक दुसरे पर निर्भर है। यह भी कल्पना की जाती है कि दोनों में संबंध है। "साहित्य अनेक वर्षों से आया हुआ एक अनुभव-समृद्ध बुजुर्ग है तो सिनेमा एक अपरिपक्व तरुण लगता है।" सिनेमा अनुभव-समृद्ध सिनेमा ने अभी याने 1994 में अपनी पहली शताब्दी पूरी की है। इसलिए साहित्य और सिनेमा इन दोनों में अंतर दिखाई देता है। लेकिन दोनों में अंतर दिखाई देने से उसमें जो प्रेम है वह कभी भी टूटनेवाला नहीं क्योंकि साहित्य और सिनेमा में एक निकट का संबंध दिखाई देता है। साहित्य और सिनेमा को एक दुसरो पर निर्भर रहना ही पड़ता है।

साहित्यकार अपनी रचना प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्र होता है। फिल्मकार को कई समझौते करने पड़ते हैं। फिल्मकार पर दर्शकों का दबाव बना रहता है। यह दबाव वस्तुतः पूंजीपती लोगों का होता है जिससे फिल्म बनाना संभव होता है। साहित्यकार पर यह दबाव प्रत्यक्ष नहीं होता। सिनेमा ने अपने आरंभिक चरण में और अपना भविष्य सँवारने के लिए साहित्य से ही प्राणतत्व ग्रहण किया है। साहित्य के पास सिनेमा की जरूरतों को पूरा करने के लिए विपूल मात्रा में भांडार है। उसमें एक और साहित्य की भाव-दशा, पात्रों का चरित्र-चित्रण, वास्तुकला, परिवेश तथा संवेगात्मक स्थितियों के दृश्यात्मक विवरण तो दुसरी ओर कलाकारों की भाव-भंगिमा तक के विस्तृत चित्रण साहित्य में दिखाई दे सकते हैं। इतनाही नहीं ध्वनियों, शब्दों भाषाओं के परिवेशगत प्रभाव तथा संगीत के सूक्ष्म भाव इनमें दिखाई दे सकते हैं।

सिनेमा ने साहित्य, संगीत और ललित कला के अनेक विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित किया है। आरंभ में मल्लिका पुखराज, रसोवन बाई, बेगम अख्तर, उस्ताद झंडे खाँ, उस्ताद अल्ला रखा खाँ बाद में उस्ताद अली अकबर खाँ, पंडित रविशंकर आदि इसमें शामिल हुए हैं। साहित्य में पंडित बेताब, पंडित सुदर्शन, मुंशी प्रेमचंद, जोश मलिकाबादी, सदाहत हसन मंटो, कृष्ण चंद्र, राजेंद्र सिंह बेदी आदि। साहित्य और सिनेमा का संबंध थोड़े-बहुत मात्रा में समान है परंतु उनकी रचनात्मकता में थोड़ा अंतर दिखाई देता है। एक अच्छी और बुरी फिल्म लेखक की न्याय-निष्ठा को कही से भी प्रभावित नहीं करती है। लेखक की न्याय-निष्ठा को कही से भी प्रभावित नहीं करती है। जब एक कृति पर फिल्म बनी तो फिल्मों की तुलना कृति से फिल्मों से ही की जाएगी। रामायण महाभारत जैसे महाकाव्यों पर भी फिल्में बनीं। उस समय तकनीकी प्रस्तुती बेहतर न होते हुए भी उस फिल्म की आत्मा बेहतर हो सकती थी तो आज की सिनेमा की आत्मा क्यों गायब होनी चाहिए। आज के इस वैश्वकरण में तकनीकी क्षमता तो बढ़ गई है परंतु सिनेमा का मूल्यबोध गायब हो जा रहा है। जैसे-जैसे सिनेमा की तकनीकी क्षमता और आयु बढ़ती गयी तब सिनेमा ने अपने लिए जैसे स्वतंत्र लेखक और संगीतकार का प्रलोभन हुआ।

सिनेमा के बारे में ओर कहा जाए तो दर्शकों की भागीदारी है। साहित्य में पाठकों की भागीदारी नहीं होती सिनेमा के हर एक दर्शक के पास खेल के दर्शकों की तरह हर एक स्थिति के लिए सुझाव होते हैं। सिनेमा का दर्शक पोषक, संगीत, कलाकार और बजटपर बहस करता है। परिणाम स्वरूप साहित्यिक कृति में काफी फेरबदल हुआ है। लेखक स्वयं यह बदल कर सकता भी है। सामान्य आदमी की नजर में लेखक ईश्वर-संतान होते हैं। फिल्मकार कभी नहीं होता। सिनेमा में गीत और संगीत रचनात्मकता विभिन्न चरणों में प्रवाहित है। स्वतंत्रता को पश्चात गीत और संगीत का मूल्यांकन साहित्य नाटक और आंशिक रूप में फिल्म के माध्यम से किया गया।

साहित्य, सिनेमा, गीत या अन्य ललित कलाएँ अपने समय के जीवन का केवल तस्वीर मात्र नहीं होती है। वे जीवन को उन्नत और शिक्षित बनाती हैं। यही उनकी सामाजिक भूमिका भी है। "चिड़ियाँ सोने के पिंजड़े में वही गीत नहीं गुनगुनाती जो खुले आकाश में गाती है। दुर्भाग्य से कलाओं की स्वतंत्रता, वाणिज्यिक परानों के पिंजड़े में कैद हो गयी है और वे उनका दोह न कर रहे हैं।"





February-2022

Feb-2022

E-ISSN - 2348-7143

124



International Research Fellows Association's  
**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal  
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 287

**Multidisciplinary Issue**

I  
N  
T  
E  
R  
N  
A  
T  
I  
O  
N  
A  
L  
  
R  
E  
S  
E  
A  
R  
C  
H  
  
F  
E  
L  
L  
O  
W  
S  
  
A  
S  
S  
O  
C  
I  
A  
T  
I  
O  
N



**Chief Editor -**  
Dr. Dhanraj Y. Dhangar,  
Assist. Prof. (Marathi)  
MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

**Executive Editors :**  
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)  
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)  
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)  
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

47





'RESEARCH JOURNEY' International E-Research Journal  
Issue - 287 : Multidisciplinary Issue  
Peer Reviewed Journal

E-ISSN :  
2348-7143  
February-2022

February-2022

E-ISSN : 2348-7143



International Research Fellows Association's  
**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal  
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue-287

**Multidisciplinary Issue**

**Chief Editor -**

Dr. Dhanraj T. Dhangar,  
Assist. Prof. (Marathi)  
MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

**Executive Editors :**

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)  
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)  
Mrs. Bhuraji Sonawane, Bhusawal (Marathi)  
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible, answerable and accountable for their content, citation of sources and the accuracy of their references and bibliographies/references. Editor in chief or the Editorial Board cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights. Any legal issue related to it will be considered in Yeola, Nashik (MS) jurisdiction only.*

- Chief & Executive Editor

**SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS**

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

\*Cover Photo : Rasia's attack on Ukrain (Source-Internet)

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-





में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भूमिका (रेडिओ तथा दूरदर्शन के संदर्भमें)

डॉ. रमेशकुमार गवळी

इलता भारतीय परिवेश

डॉ. संगिता चित्रकोटी

135

में मराठी भाषा विषयक रुचि निर्माण करने में ग्रंथालयों की भूमिका

141

डॉ. वंदना जामकर

## मराठी विभाग

व्या दैवत कथा

डॉ. अंजली मस्करेन्हस

145

नवताद

डॉ. मीनाक्षी पाटील

151

रूडातील फिरस्ते, भटके, उपेक्षित व बहुजनांचे चित्रण

डॉ. मधुकर बैकरे

155

मधील समाज जीवन

प्रा. एस. एस. मारकवाड

161

जिकीकरण

रमजान तडवी, डॉ. उज्वला भोर

165

मुक्तीचे प्रेरक आंदोलन

डॉ. अनमोल शेंडे

169

'सुध अडगळ' कादंबरीतील स्त्री विषयक चित्रण

प्रा. गौतम भालेराव

174

ल स्त्री- पात्रचित्रण

डॉ. विलास धनवे

178

लीन संदर्भ

डॉ. सुरेश वर्धे

181

कवितेतील आशय आणि विद्रोह

डॉ. धनराज माने

185

गोविलकर यांच्या कविता लेखनातील प्रतिमा व प्रेरणा

शिवाजी शिंदे

189

वास - 'सरोवर'

प्रा. विद्या सुर्वे-बोरसे

197

आणि कौटुंबिक सहभोजने' - समाज परिवर्तनाचा उपक्रम

डॉ. किशोर काजळे

199

डक ऐतिहासिक स्थळांची ऐतिहासिक चिकित्सा

डॉ. नामदेव रासकर

206

ल मालेगाव येथील कापड उद्योग निर्मितीचा ऐतिहासिक आढावा

डॉ. संजय शेलार, सुभाष आहिरे

211

री आंदोलनात दबाव गटांची भूमिका : विशेष संदर्भ 'नाशिक ते मुंबई

रविराज वटणे

216

हिलांचा सहभाग

डॉ. सुनिल चकवे

221

रणवादी चळवळ : वळीराजा धरण

डॉ. राहुल गोंगे

224





## पुणे शहरातील निवडक ऐतिहासिक स्थळांची ऐतिहासिक चिकित्सा

डॉ. राजेंद्र नामदेव रासकर  
इतिहास विभाग प्रमुख,  
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय, आंध्र, पुणे  
Email id [rajendranamdeo2350@gmail.com](mailto:rajendranamdeo2350@gmail.com)  
मोबाईल क्र. ८४८४८८२२६३



### प्रस्तावना:

भारताच्या महान सांस्कृतिक आणि राजकीय इतिहासात महाराष्ट्राला अनन्यसाधारण महत्व आहे. महाराष्ट्र प्रदेशाची निर्मिती ही अत्यंत प्राचीन आहे. आदीमानव ते आधुनिक मानवापर्यंतचे अवशेष या प्रदेशाचा इतिहास आणि विशेष अश्वरेखित करतात. महाराष्ट्रातील एकूण प्रदेशांपैकी पश्चिम महाराष्ट्र हा प्रदेश अनेक प्राचीन तत्वांचे माहेरघर मानण्यात येते. पश्चिम महाराष्ट्रातील पुणे जिल्ह्यास प्राचीन काळापासून ऐतिहासिक पार्श्वभूमी आहे. मध्ययुगीन काळात विशेषतः पेशवे कालखंडात पुणे हे भारतातील राजकीय आणि सांस्कृतिकतेचे प्रमुख केंद्र बनलेले होते. या कालखंडात पुणे शहर आणि परिसरात अनेक वास्तू निर्माण केल्या गेल्या. या वास्तू आजही दिमाखात उभे राहून आपला इतिहास सांगत आहेत. प्रस्तुत संशोधनात पुणे शहरातील निवडक ऐतिहासिक स्थळांचा थोडक्यात आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे.

### पुणे शहरातील निवडक ऐतिहासिक स्थळे

पुणे शहराची सांस्कृतिक, आर्थिक आणि ऐतिहासिक भरभराट ही खऱ्या अर्थाने यादव काळापासून झाली होती. मध्ययुगात विशेषतः शिवकाळ व पेशवेकाळात पुण्याला अनन्यसाधारण महत्व प्राप्त झाले. पुणे परिसर आणि शहरातील ऐतिहासिक स्थळांमध्ये शिवनेरी, सिंहगड, लोहगड, पुरंदर, राजगड, तोरणागड, वज्रगड इत्यादी किल्ले तसेच बडू बुद्रुक, विसापूर, शनिवारवाडा, महादजी शिंदे यांची छत्री, विश्रामवागवाडा, पितळखोरे लेणी व केळकर वस्तुसंग्रहालय इत्यादींचा समावेश होतो. त्यापैकी पुणे शहरातील पुढील स्थळे ही अत्यंत महत्त्वाची आणि ऐतिहासिक आहेत त्याची चिकित्सा पुढीलप्रमाणे:

#### १. कसबा पेठ गणपती मंदिर :

पुणे शहर हे गणपतीच्या मंदिरांसाठी विशेष प्रसिद्ध आहे. दगडूशेठ हलवाई गणपती मंदिर, कसबा पेठेतील गणपती मंदिर ही मंदिरे सर्वदूर प्रसिद्ध आहेत. यापैकी कसबा पेठेतील गणपती मंदिर अत्यंत जुने मानले जाते. या गणपतीला श्री सूर्यमुखी गणपती असेही म्हणतात. सध्याचे कसबा गणपतीचे मंदिर हे आधुनिक शैलीचे आहे, परंतु मंदिरातील मूर्ती ही फार पूर्वीची असल्याचे दिसून येते. शहाजी महाराज यांनी बेंगळूरहून शिवराव आणि जिजाबाई यांना पुण्यात पाठविले. हिंदवी स्वराज्याचा श्रीगणेशा या जहागिरीच्या नावापासून करण्याचा संकल्प झाला. इसवी सन १६४० ते १६४२ या कालावधीत जिजाबाई यांनी पुण्यामध्ये लाल महालाची बांधणी केली त्यावेळी त्यांनी या गणपतीची स्थापना केली असे सांगितले जाते. कसबा गणपती मंदिरामधील गणपतीची मूर्ती ही जमिनीवर ठाण मांडून बसलेली आहे. मूर्तीची उंची सुमारे तीन फूट आहे. शेंदूर फासलेला असल्यामुळे मूर्तीचा आकार मोठा झालेला आहे. गणपतीच्या मूर्तीची सोंड डाव्या बाजूस असून ती डाव्या हातातील मोदक पात्रात टेकलेली आहे. या मूर्तीचा एक पाय दुमडला आहे. दुसरा पाय काहीसा पसरलेला आहे. पावाशी मोठे काळ्या पाषाणातील शिवलिंग असून ममोर छोटा नंदी आहे. या मंदिरातील मूर्तीकडे पाहिले असता असे दिसते की, ही मूर्ती शिवलिंगाची पूजा करित आहे. मंदिरातील शिवलिंग व गणपती हे एका अखंड दगडातील आहेत. गणपतीसमोर मोठे शिवलिंग क्वचित पाहावयास मिळते. एका अखंड दगडातील गणपती व शिवलिंगाचे हे एकमेव स्थान आहे. त्यामुळे ते वैशिष्ट्यपूर्ण वाटते. पूर्वीच्या काळी कर्नाटकातून आलेल्या ठकार कुटुंबाकडे गणरायाची पूर्जाअर्चा आणि व्यवस्था देण्यात आली. आजही याच कुटुंबाकडे मंदिरातील मूर्तीच्या पुजेची व्यवस्था असल्याचे पाहावयास मिळते.

#### २. पर्वती

पुण्याच्या नैऋत्य दिशेला पर्वती ही छोटी टेकडी आहे. या टेकडीवर पर्वती किंवा पर्वताई देवीचे स्थान प्राचीन काळातील आहे. पर्वती गावाचे उल्लेख शिवकालात ही सापडतात. पर्वती देवीच्या नावावरून या





टेकडीला पर्वती हे नाव पडले आहे. सन १७४९ मध्ये बाळाजी बाजीराव उर्फ नानासाहेब पेशव्याने पर्वती टेकडीच्या माथ्यावर मंदिर बांधून त्यातील प्रमुख मंदिरात देवदेवेश्वराच्या मूर्तीची प्रतिष्ठापना केली. तेव्हापासून त्यांनी पर्वतीवरील मंदिराचा स्वतंत्रपणे कारभार चालविण्यास सुरुवात केली. सरदार खासगीदारे यांच्या देखरेखी खाली हा कारभार चालविण्यात येत असे. १

पर्वती देवीचे महत्त्व पाहत असताना असे दिसून येते की, थोरल्या बाजीरावाची पत्नी काशीबाई यांच्या आज्ञाराने त्रस्त होत्या. तेव्हा तिचा आजार बरा व्हावा या हेतूने नानासाहेब पेशव्यांनी सुरेख मंदिर बांधले. अशाप्रकारे जी टेकडी ओसाड होती त्यास या मंदिरामुळे महत्त्व आले. नानासाहेब पेशव्यांनी पर्वती देवीचे मंदिर उभारून त्याच्या जोडीला देवदेवेश्वर, विष्णू, गणपती व सूर्य अशी चार मंदिरे उभारून शिवपंचायतन सिद्ध केले. नानासाहेब पेशवे शंकराचे निःस्तीम भक्त होते. त्यांनी आपले काका चिमाजी आप्पा यांनी मुठा नदीच्याकाठी श्री ओंकारेश्वराचे मंदिर बांधले होते. त्याचे अनुकरण करून पर्वतीवर नानासाहेबांनी देवदेवेश्वराचे मंदिर बांधले. पर्वतीवर चार मंदिरे बांधून त्या मंदिराच्या सभोवती अष्टकोनीय तटबंदी उभारली. मंदिरात जाण्यासाठी एक महादरवाजा तयार केला आहे. ४

नानासाहेबांनी देवदेवेश्वर शंकराची मूर्ती रूप्याची तर त्याच्या मांडीवर बसलेली पार्वती व गणपतीची मूर्ती भरीव सुवर्णाची करून घेतली आहे. शंकराची मूर्ती ६३३७ तोळे, श्रीपार्वती १२४५ तोळे व गणपतीची मूर्ती ६८६ तोळे अशा वजनाची आहे. याशिवाय प्रत्येक मूर्तीला हिरे-माणकांचे अलंकार सजवले आहेत. तसेच मंदिराच्या पाच कळसांनाही तांब्यावर सोन्याचा मुलामा देऊन लखलखीत करण्यात आले आहे. त्यासाठी १०७९ तोळे सोने खर्च करण्यात आले आहेत. शत्रूच्या हल्ल्याप्रसंगी या मूर्ती सिंहगडावर हलविण्यात येत असत.

शत्रूच्या हल्ल्याचे अनेक प्रसंग घडले होते. त्यामध्ये सन १७५३ व १७६३ चे निजामाचे हल्ले ज्ञाले त्यावेळी निजामाने पर्वतीवर नासधूस केली. तेथे काहीही न सापडल्याने त्याने मंदिराचे कळस कापून नेले. सन १७६८ मधील महादजी भोसले याने पुण्यावर स्वारी केली. इ.स.१८०३ मधील होळकरांची पुण्यातील नासधूस आणि १८१७ मधील इंग्रजांशी मराठ्यांची झालेली लढाई, त्यावेळी पर्वतीवरील मूर्ती सिंहगडावर नेण्यात आल्या होत्या. १५ जुलै १९३२ रोजी पार्वती व गणपतीच्या सुवर्णमूर्ती चोरीला गेल्या होत्या. त्या मूर्ती अजूनही सापडल्या नाहीत. आज त्याठिकाणी सोन्याचा मुलामा दिलेल्या मूर्ती पाहावयास मिळतात. १

पर्वतीवर वाड्याच्या मागील बाजूस कार्तिकेय मंदिर आहे. कार्तिकेय हा शंकराचा पुत्र मानला जातो. विशेष म्हणजे महाराष्ट्रात कार्तिकेय मंदिरे बांधण्याची प्रथा कोठेही आढळत नाही. पेशवा नानासाहेब यांचे वंधू रघुनाथराव यांनी या मंदिराची उभारणी तेथे केलेली दिसते. आजपर्यंत कार्तिकेयची मूर्ती सहा वेळा बदलून पुनर्स्थापना करण्यात आली. दुसऱ्या बाजीराव पेशव्याने पर्वतीसाठी खूप खर्च केला होता. त्याने तेथे रस्ता व पाणी याची सोय केली होती. तसेच त्याने आजपर्यंत खासगी व्यवस्थेने चालविण्यात येणाऱ्या पर्वती संस्थानचा कारभार सन १८०३ नंतरच्या काळात स्वतंत्रपणे पंचमंडळी नेमून चालविण्याची प्रथाही सुरू केली त्यामुळे पेशवाईच्या अस्तानंतरही पर्वती संस्थानांची योग्य संभावना करून इंग्रजांनीही ते व्यवस्थित चालण्यासाठी लक्ष दिले. ३१ जानेवारी १८४२ रोजी मुंबई सरकारने ठराव करून संस्थानाची व्यवस्था पुण्याचे कलेक्टर आणि पुण्यातील प्रतिष्ठित नागरिकांपैकी सहा पंच नेमून त्यांच्याद्वारे करावी, अशी व्यवस्था केली. ही व्यवस्था सन १९७२ पर्यंत चालू होती. त्यानंतर पर्वती संस्थानाची व्यवस्था धर्मादाय आयुक्तांच्या संमतीने पंचमंडळीची नेमणूक करून चालविली जाते. पेशव्यांचे वंशज वि.वि.पेशवा संस्थानाचे सरपंच आहेत. अन्य पंचमंडळीत बापूसाहेब जोशी, वसंतराव नूलकर, नानासाहेब बले, रामभाऊ चव्हाण, भगवानपंत जोशी इत्यादींचा समावेश आहे. पुण्याचे जिल्हाधिकारी पदसिद्ध विश्वस्त आहेत. या सर्वांनी चांगल्या प्रकारे पर्वतीची देखभाल ठेवलेली आहे. १

पुणे जिल्ह्यातील धार्मिक स्थळे ही आजच्या विज्ञानयुगात टिकून आहेत. या धार्मिक तीर्थक्षेत्रांनी अध्यात्मिक अधिष्ठानावर भौतिक वैज्ञानिक आणि संघर्षाएवजी समन्वयाचा दृष्टीकोण हा भारताबरोबर जगाला दिलेला अमोल ठेवा आहे. आपल्या राष्ट्रीय संस्कृतीचे अधिष्ठान अध्यात्म हे आहे. आपली जीवनमूल्ये, महान संस्कृती, सभ्यता, मनोधारणा व उच्च ध्येये इत्यादीमुळे आधुनिक जगाला जे प्रश्न पडतात. त्याचे समाधानकारक







उत्तर धार्मिक स्थळांच्या अध्यात्मात आहे. म्हणूनच या धार्मिक स्थळामुळे आपली भारतभूमी जगाचा आध्यात्मिक गुरू आहे.

### ३. सिंहगड:

पुणे परिसरात किल्ले सिंहगड उर्फ कोंडाणा हा प्राचीन किल्ला आहे. पुणे शहराच्या नैऋत्येस सुमारे २० किमी अंतरावर हा किल्ला बसलेला आहे. या किल्ल्याची समुद्रसपाटीपासूनची उंची १३१७ मी. आहे. या किल्ल्यास शिवकाळात महत्त्वाचे ऐतिहासिक स्थान लाभलेले होते. तरवीर तानाजी मालुसरे यांने या किल्ल्यावर आपल्या प्राणाची आहुती देऊन मोगलांकडून हा किल्ला जिंकून घेऊन मराठा स्वराज्यात दाखल केलेला होता.\*

### अ. सिंहगड किल्ल्याची रचना :

सिंहगड किल्ल्याच्या मुख्य ठिकाणी जाण्यासाठी तीन दरवाजे पार करावे लागतात. यातील तिसरा दरवाजा हा सर्वात प्राचीन आहे. या दरवाजाच्या वाजूला खडकात खोदलेल्या घोडपागा आहेत त्याच्यापुढे गणेश टाके व रत्नशाळेचा चौथरा आहे. त्याच्याच शेजारी दारूखान्याची इमारत आहे. तेथेच लोकमान्य टिळकांचा बंगला आहे. या बंगल्याच्या कोपऱ्यावरच टिळकांचा पुतळा आहे.

सिंहगडाच्या तिसऱ्या दरवाजातूनच पुढे बालेकिल्ल्याकडे जाताना डाव्या हातास तानाजीचे स्मारक आहे. सिंहगड स्मारक मंडळाने उभारलेली मेघडंबरी व त्यामध्ये तानाजीचा पुतळा आहे. दरवर्षी येथे माघ वद्य नवमीस पुण्यतिथी साजरी केली जाते स्मारकाच्या पाठीमागे भैरवनाथाचे मंदिर आहे. बालेकिल्ल्यावर प्रवेश करतेवेळी कल्याण दरवाजा लागतो. या दरवाजाचे वैशिष्ट्य म्हणजे नेताजी सुभाषचंद्र बोस यांनी येथेच बसून रवींद्रनाथ टागोर यांनी बंगाली भाषेत रचलेल्या शिवकाव्याच्या स्मृती जागवल्या होत्या. ८

कल्याण दरवाजाच्या पुढे तटातटाने गेल्यास डोंगगिरीचा कडा लागतो. या कड्यातून चढून तानाजीने आपल्या तीनशे मावळ्यांसह किल्ल्यात प्रवेश केला होता तेथून उत्तरेकडे गेल्यास शिवपुत्र छत्रपती राजाराम महाराजांची समाधी लागते. त्यापुढे कोंडाणेश्वर महादेवाचे मंदिर आहे. अशा प्रकारे सिंहगडावर घोड पागा, खोदकडा, दारूकोठार, लोकमान्य टिळकांचा बंगला, कोंडिण्येश्वर मंदिर, तानाजीचे स्मारक, उदयभान राठोडचे थडगे व राजाराम महाराजांची समाधी इत्यादी ऐतिहासिक वस्तू आहेत. ९

### आ. किल्ल्याचा इतिहास

सिंहगड किल्ला हा प्राचीन काळापासून अस्तित्वात आहे. सन १३५० मधील एका फारसी 'कुंधला' असा उल्लेख आढळतो. कोंडिण्य ऋषींचे वास्तव्य गडावर होते. त्यांच्या नावावरून कोंडाणा हे नाव रूढ झाले. सन १३४० च्या सुमारास महमंद तुघलकाने सिंहगडावर हल्ला केला यावेळी नागनाईक हा कोळी सरदार किल्लेदार होता. त्याने तुघलकाच्या सैन्याविरुद्ध आठ महिने गड लढविला. अखेर हा किल्ला महमंदाने जिंकला यानंतर गडावर मुसलमान सत्तेचे वर्चस्व राहिले. तुघलकाकडून बहामनीकडे पुढे निजामशहा मग विजापूरकरांकडे हा गड होता." १०

छत्रपती शिवाजी महाराजांनी सन १६४७ मध्ये हा किल्ला गोडी गुलाबीने वापूजी मुदगल नन्हेकर यांना वश करून ताब्यात घेतला. पण १६४९ मध्ये शहाजीराजांची आदिलशहाच्या कैदेतून सुटका करण्याच्या बदल्यात सिंहगड आदिलशहाला परत द्यावा लागला. त्यानंतर राजांनी तो परत मिळविला. ५ एप्रिल १६६३ रोजी शिवाजीराजांनी शाहिस्तेखानावर छापा घालून ते सिंहगडावर आले होते. १६६५ मध्येच पुरंदरच्या तहाने सिंहगड किल्ला मोगलांना दिला. सन १६७० मध्ये महाराजांनी मोगलांविरुद्ध युद्ध आघाडी उभारली. पुरंदर तहामध्ये मोगलांना दिलेले सर्व गड परत जिंकून घेण्याचे ठरले आणि पहिला गड निवडला तो सिंहगड. सिंहगड घेण्याची कामगिरी तानाजी मालुसरे यांच्यावर सोपविली. सिंहगडावर उदयभान राठोड हा पराक्रमी मोगल किल्लेदार होता. ४ फेब्रुवारी १६७० रोजी तानाजी मालुसरे निवडक सैन्यासह डोंगगिरी कडा चढून किल्ल्यावर गेल्यावर युद्दाला सुरुवात झाली. नंतर सुर्याजी मालुसरे निवडक सैन्यासह डोंगगिरी कडा चढून घेतले. लढाईत तानाजीच्या हातातून दोन बुट्टी तेव्हा हातावर तलवारीचे घाव झेलून मोठे युद्ध केले. या युद्धात दोघेही ठार झाले. गवताची गंजी पेटली मोहिम फत्ते झाली म्हणून राजे तावडतोव गडावर आले. समोर





त्यांना तानाजी मालुसरेचा देह दिसल्याने ते उद्गारले 'गड आला, पण सिंह गेला!' तेव्हापासून या गडास सिंहगड हे नाव पडले. ११

११ मार्च १६८९ रोजी संभाजीराजांच्या वधानंतर औरंगजेवाने एकापाठोपाठ एक किल्ले घेण्यास प्रारंभ केला. त्यास प्रत्युत्तर म्हणून संताजी घोरपडे यांनी तुळापुवास औरंगजेबाची छावणी असता रात्रीच्या वेळी छापा घालून तंबूच्या तणावा व कळस कापले. हे कृत्य करून ते सिंहगडावर आले त्यावेळी सरसेनापती प्रतापराव गुजर याचा मुलगा सिधोजी हा किल्ल्याचा किल्लेदार होता. त्याने त्या सर्वांची काळजी घेतली होती. पुढे ३ मार्च १७०० रोजी छत्रपती राजाराम महाराजांचा मृत्यू या किल्ल्यावर झाला. १२

इ.स. १७०२ मध्ये हा किल्ला पुन्हा मुघल बादशहा औरंगजेब याने जिंकून घेतला. इ.स. १७०५ मध्ये अय्यबक शिवदेव, पंताजी शिवदेव आणि रामजी फाटक यांनी सिंहगड किल्ला जिंकून घेतला तेव्हा औरंगजेब बादशहाने झुल्फिकारखान यास किल्ला घेण्यास पाठविले. त्याने किल्ल्याला वेढा दिला. शेवटी मराठ्यांनी मोठी रक्कम घेऊन हा किल्ला बादशहाला देऊन टाकला. पुढे औरंगजेब बादशहाच्या (१७०७) मृत्यूनंतर हा किल्ला मराठ्यांनी आपल्या ताब्यात घेतला.

पेशवे काळात नारायणराव पेशव्यांचा विवाह सिंहगडावर झाला होता. पुण्यातील संपत्ती ही आणीबाणीच्या काळात सुरक्षित राहावी म्हणून सिंहगडावर नेली जात होती. निजामाने मे १७७३ मध्ये पुणे जाळले. त्यावेळी सिंहगडावरील संपत्तीमुद्धा निजामाच्या हाती पडली. परंतु पुढे पुन्हा हा किल्ला पेशव्यांच्या ताब्यात आला. इंग्रजांनी मार्च १८१८ मध्ये सिंहगड हा किल्ला जिंकला. त्यावेळी त्यांना गडावरील ६७ तोफा व पन्नास लक्ष रुपयांची लूट मिळाली. तसेच पर्वतीच्या सोन्याच्या मूर्ती व पाच लाख रुपयांची गणेशमूर्ती देखील इंग्रजांना मिळाली. १३

सन १८८९-९० मध्ये लोकमान्य टिळक सिंहगडावर येऊन राहिले होते. तेथे त्यांनी आर्किटेक होम इन द वेदाज या ग्रंथाचे लिखाण केले. सन १९१५ मध्ये गीता रहस्य या ग्रंथाची मुद्रणप्रत याच ठिकाणी तयार झाली. याच साली लोकमान्य टिळक व महात्मा गांधीजींची भेट टिळक बंगल्यात झाली. हा बंगला लोकमान्य टिळकांनी रामलाल नाईक यांच्याकडून खरेदी केला होता. १४

### पुणे शहरातील ऐतिहासिक स्थळांचे महत्त्व

पुणे शहरातील धार्मिक व ऐतिहासिक स्थळे ही महत्त्वपूर्ण आहेत. यातील काही स्थळे ही प्राचीन, काही मध्ययुगीन व काही आधुनिक काळातील आहेत. या धार्मिक स्थळांच्या ठिकाणी सण उत्सव व यात्रा साजऱ्या केल्या जातात. यावरून या स्थळांचे महत्त्व दिसून येते. पुराणातून आणि प्राचीन धर्मग्रंथातून वर्णन केलेली ही धार्मिक स्थळे आजच्या काळातही आपले आध्यात्मिक महत्त्व टिकवून आहेत, हे स्पष्ट होते. महाराष्ट्राच्या सांस्कृतिक व धार्मिक विश्वाची जवळून ओळख करून घेण्यासाठी या स्थळांचे महत्त्व मोठया प्रमाणावर आहे. या धार्मिक स्थळांची माहिती पाहिली असता त्यातून मराठी मनाच्या धार्मिकतेचा प्रत्यय येतो. या धार्मिक स्थळांनी महाराष्ट्राचे नव्हे, तर भारताचे आध्यात्म टिकवून ठेवले आहे. पुणे कसबा गणपती आणि दगडू हलवाई गणपती सारख्या धार्मिक ठिकाणांना अध्यात्माच्यादृष्टीने महत्त्व लाभले आहे.

पुणे शहरातील ऐतिहासिक स्थळांनी महाराष्ट्राच्या गौरवशाली इतिहासात मोठी भर घातली आहे. यातील काही स्थळे ही प्राचीन काळातील असल्याने त्या काळातील इतिहास समजण्यास मदत झाली आहे. मध्ययुगीन व आधुनिक काळातील इतिहास जाणून घेण्यासाठी त्या काळातील स्थळे ही पुणे जिल्ह्यात खूप आहेत. या स्थळावरून त्या काळातील राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक परिस्थिती समजण्यास मदत झाली आहे. त्यावेळचे रितीरिवाज, राहणीमान याचा ही प्रत्यय येतो. पुणे शहरातील आणि परिसरातील महत्त्वाच्या ऐतिहासिक घटना या स्थळांच्या माध्यमातून घडल्या होत्या.

### समारोप :

हिंदवी स्वराज्याचे संस्थापक छत्रपती शिवाजी महाराजांचा जन्म शिवनेरी किल्ल्यावर झाला. युवराज संभाजी यांचाही जन्म पुरंदर किल्ल्यावर केला. छत्रपती शिवाजी राजांनी स्वराज्याच्या कार्याचा प्रारंभ पुणे शहरातूनच झाला. एवढेच नव्हे तर स्वराज्याची प्रारंभीची राजधानी ही पुणे जिल्ह्यातील राजगड किल्ला ही होती. छत्रपती राजाराम महाराजांचा जन्म राजगड किल्ल्यावर झाला तर मृत्यू ही पुणे जिल्ह्यातील सिंहगड किल्ल्यावर झाला. पुढे छ.शाहूंच्या काळात तर पेशव्यांनी पुण्याचे महत्त्व वाढवून पुणे येथून मराठी राज्याचा







कारभार सुरु झाला होता. अशा अनेक ऐतिहासिक घटना पुणे शहर आणि आसपासच्या परिसरात घडल्याने पुणे शहराला ऐतिहासिक वारसा लाभलेला आहे आणि पुणे शहर हे ऐतिहासिकदृष्ट्या महत्वाचे स्थान टिकवून आहे.

### संदर्भ तळटीपा

१. महाजन शां.ग., पुणे शहराचा ज्ञानकोश, पुणे शहराचा ज्ञानकोश प्रतिष्ठान, पुणे, २००४, पृ. २०६
२. किता, पृ. १२२
३. श्री भाटये, पुण्याची पर्वती, १९९३, पृ. २३
४. महाजन शां.गो., उपरोक्त, पृ. १२२
५. नूलकर व.क., पर्वती मंदिरे व इतिहास, पुणे १९९६ पृ. ५४
६. किता, पृ. ६०
७. चिले भगवान, गडकोट, २००४, पृ. ३३.
८. देशपांडे द.ग., महाराष्ट्रातील किल्ले, पुणे, २०११, पृ. १९५.
९. घाणेकर प्र.के., उपरोक्त, पृ. २००
१०. अक्कलकोट सतीश, उपरोक्त, पृ. ४२९
११. किता, पृ. ४२९
१२. चिले भगवान, उपरोक्त, पृ. ३५
१३. अक्कलकोट सतीश, उपरोक्त, पृ. ४३६
१४. देशपांडे द.ग., उपरोक्त, पृ. १९६

